

From

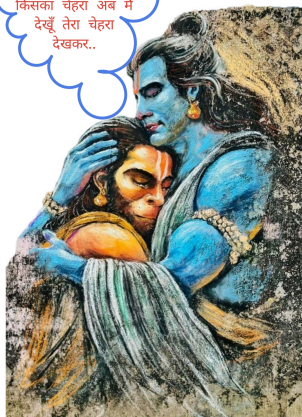
To

देह —→ देही

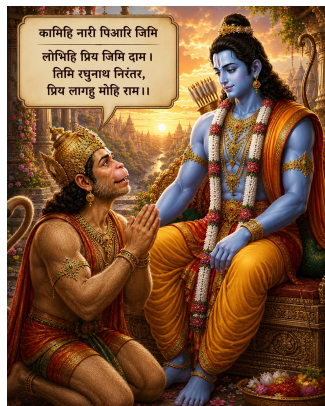
अभिमानी अभिमानी



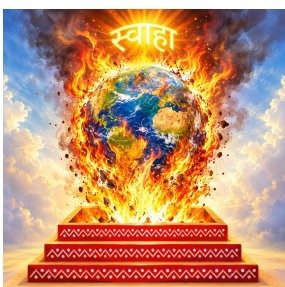
मेरी आँखों ने चुना है
तुझको दुनिया देखकर,
किसका चेहरा अब मैं
देखूँ तेरा चेहरा
देखकर..



19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अब विदेही बनने का अभ्यास करो,**अपनी इस विनाशी देह से प्यार निकाल एक****शिववावा को प्यार करो"**

None but Only One

**प्रश्न:- इस बेहद की पुरानी दुनिया से जिन्हें वैराग्य आ चुका है उनकी निशानी क्या होगी?**

उत्तर:- वह इन आंखों से जो कुछ देखते हैं वह देखते हुए भी जैसे नहीं देखेंगे। उनकी बुद्धि में यह होगा कि यह सब खत्म होना है। यह सब मरे पड़े हैं। हमको तो शान्तिधाम, सुखधाम में जाना है। उनका ममत्व मिटता जायेगा। योग में रहकर किससे बात करेंगे तो उन्हें भी कशिश होगी। ज्ञान का नशा चढ़ा हुआ होगा।

गीत:- ओम् नमो शिवाए...**Click**

ॐ नमः शिवाय
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो
जिसका कोई आधार नहीं
उसके तुम एक सहारे हो
पितु मात सहायक स्वामी सखा
तुम ही सब के रखवारे हो

तेरी लीला अपरंपार प्रभु
तेरी महिमा सबसे न्यारी है
जब जब धरती पर पाप बढ़ा
तूने ही विपदा ढारी है
इस जीवन के अंधियारे में
बस एक तुम्ही ऊजियारे हो

इक नाम तेरा ही सच्चा है,
बाकी सब जूठी माया है।

**जो अपना सब कुछ छोड़ चला,
उसने ही तुमको पाया है।**

जिस मन में तुम्हारी भक्ति जगी,
उसके तुम्ही तो सहारे हो।
पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।
जिसका कोई आधार नहीं,
उसके तुम एक सहारे हो।

पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुम ही सब के रखवारे हो।

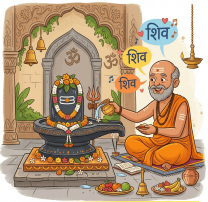
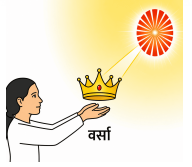
दोनों हाथों में लड्डू चाहने वाले ...
एक तरफ भौतिक दुनिया
(व्यक्ति, वैभव, वस्तु, नाम-मान-शान
ईत्यादि) की लालसा या आकर्षण
मात्र भी हो और
दूसरे तरफ भगवान को भी पाना
हो।
तो वो कभी भी बाबा/भगवान को
पा नहीं सकता। - ये पक्का समझ
लो।

**रणा****सेवा****M.imp.**

19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

चढ़ाओ नशा...

ओम् शान्ति। बाप कहते हैं मीठे बच्चे तुम शिवबाबा को जान गये हो। फिर यह गीत गाना तो जैसे भक्ति मार्ग का हो जाता है। भक्ति मार्ग वाले शिवाए नमः भी कहते हैं, मात-पिता भी कहते हैं, परन्तु जानते नहीं हैं। शिवबाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलना चाहिए।

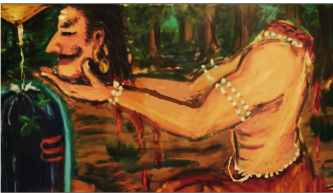


सोचो तुमको कौन मिला है, कौन तुम्हारा साथी है।



चढ़ाओ नशा...

जिसकी एक झलक मात्र पाने के लिए दुनिया वाले अपना शिर तक उतार कर रख देने को तैयार खड़े हैं।

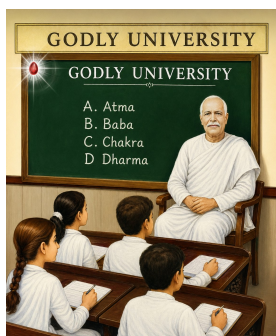


वो विश्वनाथ तुम्हारे सामने सेवक बनकर उपस्थित है। Please Value this invaluable Time इसको साधारण नहीं समझो, नहीं तो अंत में खून के आँसू रोना पड़ेगा।

"दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है, मिल जाए तो मिट्टी है, खो जाए तो सोना है।" - निदा फ़ाज़ली

पूछो अपने आपसे... कहीं हमारी भी स्थिति ऐसी ही तो नहीं है ना, जब की स्वयं भगवान्(पारस मणी) हमें मिल गए हैं और हम उनको मिट्टी के समान वैल्यू देकर चल रहे हैं...?

तुम बच्चों को तो बाप मिला है, उनसे वर्सा मिल रहा है इसलिए बाप को याद करते हो। तुमको शिवबाबा मिला है, दुनिया को नहीं मिला है। जिनको मिला है वह भी अच्छी रीति चल नहीं सकते। बाबा के डायरेक्शन बड़े मीठे हैं, आत्म-अभिमानी भव, देही-अभिमानी भव। बात ही आत्माओं से करते हैं। देही-अभिमानी बाप, देही-अभिमानी बच्चों से बात करते हैं। वह तो एक ही है। सो तो मधुबन में तुम बच्चों के साथ बैठा है। तुम बच्चे जानते हो कि बरोबर बाप आये ही हैं पढ़ाने। यह पढ़ाई सिवाए शिवबाबा के कोई पढ़ा न सके। न ब्रह्मा, न विष्णु। यह तो बाप ही आकर पतितों को पावन बनाते हैं, अमरकथा सुनाते हैं। सो भी यहाँ ही सुनायेंगे ना। अमरनाथ पर तो नहीं सुनायेंगे ना। यही अमरकथा सत्य नारायण की कथा है। बाप कहते हैं - मैं तुमको सुनाता तो यहाँ ही हूँ। बाकी यह सब हैं भक्ति मार्ग के धक्के। सर्व का



Exclusive Authority of Shiv baba



Points:

ज्ञान

योग

M.imp.





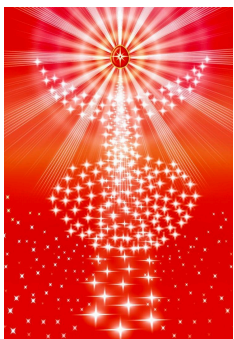
19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

सद्गति दाता राम एक निराकार ही है। वही पतित पावन, ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। वह

आता ही तब है जब विनाश का समय होता है। सारे

ये तो पक्का कर लो..

जगत का गुरु तो एक परमपिता परमात्मा ही हो सकता है। वह निराकार है ना। देवताओं को भी मनुष्य कहा जाता है। परन्तु वह दैवीगुणों वाले मनुष्य हैं इसलिए उनको देवता कहा जाता है।



तुमको अभी ज्ञान मिला है। ज्ञान मार्ग में अवस्था बड़ी मजबूत रखनी है। जितना हो सके बाप को याद

As much As possible

करना है। विदेही बनना है। फिर देह से प्यार ही क्यों करें! बाबा तुमको कहते हैं शिवबाबा को याद करो

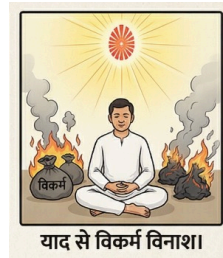
फिर इनके पास आओ। मनुष्य तो समझते हैं यह दादा से मिलने जाते हैं। यह तो तुम जानते हो शिवबाबा को याद कर हम उनसे मिलते हैं। वहाँ तो

हैं ही निराकारी आत्मायें, बिन्दी। बिन्दी से तो मिल न सकें। तो शिवबाबा से कैसे मिलेंगे इसलिए यहाँ

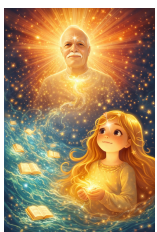
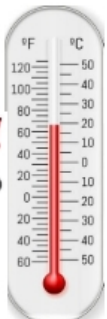
समझाया जाता है, हे आत्मायें अपने को आत्मा समझ बुद्धि में यह रखो कि हम शिवबाबा से मिलते

19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हैं। यह तो बड़ा गुह्य राज है ना। कइयों को शिवबाबा की याद नहीं रहती है। बाबा समझाते हैं हमेशा शिवबाबा को याद करो। शिवबाबा आपसे मिलने आते हैं। बस आपके बने हैं। शिवबाबा इसमें आकर ज्ञान सुनाते हैं। वह भी निराकार आत्मा है, तुम भी आत्मा हो। एक बाप ही है जो बच्चों को कहते हैं मामेकम् याद करो। सो तो बुद्धि से याद करना है। हम बाप के पास आये हैं। बाबा इस पतित शरीर में आये हैं। हम सामने आने से ही निश्चय कर देते हैं, शिवबाबा हम आपके बने हैं। मुरलियों में भी यही सुनते हो -मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे।



तुम जानते हो यह वही पतित-पावन बाप है। सच्चा सच्चा सतगुरू वह है। अब तुम पाण्डवों की है परमपिता परमात्मा से प्रीत बुद्धि। बाकी सभी की तो कोई न कोई के साथ विपरीत बुद्धि है। शिवबाबा के जो बनते हैं उन्हीं को तो खुशी का पारा बड़ा जोर से चढ़ा रहना चाहिए। जितना समय नजदीक आता



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन है, उतनी खुशी होती है। हमारे अब 84 जन्म पूरे हुए। अब यह अन्तिम जन्म है। हम जाते हैं अपने घर। यह सीढ़ी तो बहुत अच्छी है, इसमें क्लीयर है। तो बच्चों को सारा दिन बुद्धि चलानी चाहिए। चित्र बनाने वालों को तो बहुत विचार सागर मंथन करना है, जो हेड्स हैं उन्हों का ख्याल चलना चाहिए। तुम तो चैलेन्ज देते हो - सतयुगी श्रेष्ठाचारी दैवी राज्य में 9 लाख होंगे। कोई बोले इसका क्या प्रूफ है? कहो यह तो समझ की बात है ना। सतयुग में झाड़ होगा ही छोटा। धर्म भी एक है तो जरूर मनुष्य भी थोड़े होंगे। सीढ़ी में सारी नॉलेज आ जाती है। जैसे यह कुम्भकरण वाला चित्र है। तो यह ऐसा बनाना चाहिए बी. के. ज्ञान अमृत पिलाती हैं, वे विष (विकार) मांगते हैं। बाबा मुरली में सब डायरेक्शन देते रहते हैं। हर एक चित्र की समझानी बड़ी अच्छी है। लक्ष्मी-नारायण के चित्र पर बोलो यह भारत स्वर्ग था, एक धर्म था तो कितने मनुष्य होंगे। अब कितना बड़ा झाड़ हो गया है। अब विनाश होना है। पुरानी सृष्टि को बदलने वाला एक ही बाप है। 4-5 चित्र हैं मुख्य जिससे किसको धक से तीर लग जाए। ड्रामा अनुसार दिन-प्रतिदिन ज्ञान की प्वाइंट्स गुह्य होती

Attention..!

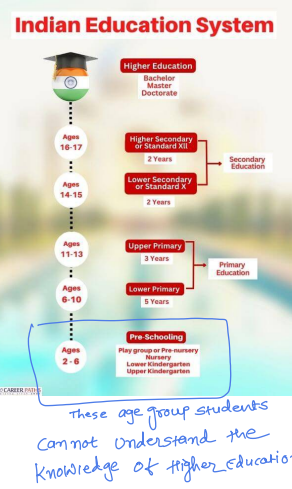
I can only show you the door



"I'm trying to free your mind, Neo. But I can only show you the door. You're the one that has to walk through it."



19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



असित-गिरि-समं स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे,
सुर-तस्वर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

"हे शिव, यदि नीले पर्वत को समुद्र में मिला कर स्याही तैयार की जाए, देवताओं के उद्यान के वृक्ष की शाखाओं को लेखनी बनाया जाए और पृथ्वी को कागद बनाकर भगवती शारदा देवी अर्थात् सरस्वती देवी अनंतकाल तक लिखती रहें तब भी हे प्रभो! आपके गुणों का संपूर्ण व्याख्यान संभव नहीं होगा।"

Subtle Point to understand



जाती हैं। तो चित्रों में भी चेंज होगी। बच्चों की बुद्धि में भी चेंज होती है। आगे यह थोड़ेही समझते थे कि शिवबाबा बिन्दी है। ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि पहले ऐसा क्यों नहीं बताया। बाप कहते हैं। सब बातें पहले ही थोड़ेही समझाई जाती हैं। बाप ज्ञान का सागर है तो ज्ञान देते ही रहेंगे। करेक्शन होती रहेगी। पहले से ही थोड़ेही बता देंगे। फिर आर्टीफिशियल हो जाए। अचानक कोई इतफाक आदि होते रहेंगे फिर कहेंगे ड्रामा। ऐसे नहीं यह नहीं होना चाहिए। मम्मा को तो पिछाड़ी तक रहना था, फिर मम्मा क्यों चली गई। ड्रामा में जो हुआ सो राइट। बाबा ने भी जो कहा सो ड्रामा अनुसार कहा। ड्रामा में मेरा पार्ट ऐसा है। बाबा भी ड्रामा पर रख देते हैं। मनुष्य कहते हैं ईश्वर की भावी। ईश्वर कहते हैं ड्रामा की भावी। ईश्वर ने बोला या इसने बोला, ड्रामा में था। कोई उल्टा काम हुआ ड्रामा में था, फिर सुल्टा हो जायेगा। चढ़ती कला जरूर है। चढ़ाई पर जाते हैं, कब डगमग हो जाते हैं। यह सब माया के तूफान हैं। जब तक माया है विकल्प जरूर आयेंगे। सतयुग में माया ही नहीं तो विकल्प की बात ही नहीं। सतयुग में कभी कर्म विकर्म नहीं होते। बाकी थोड़े रोज़ हैं, खुशी रहती है।



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधु



यह हमारा अन्तिम जन्म है। अब अमरलोक में जाने के लिए शिवबाबा से अमरकथा सुनते हैं। यह बातें तुम ही समझते हो। वो लोग कहाँ-कहाँ अमरनाथ पर जाकर धक्के खाते रहते हैं। यह नहीं समझते कि पार्वती को कथा किसने सुनाई? वहाँ तो शिव का चित्र दिखाते हैं। अच्छा शिव किसमें बैठा? शिव और शंकर दिखाते हैं। क्या शिव ने शंकर में बैठ कथा सुनाई? कुछ भी समझते नहीं हैं, भक्ति मार्ग वाले अभी तक तीर्थ करने जाते रहते हैं। कथा भी वास्तव में बड़ी नहीं है। असुल है मनमनाभव। बस, बीज को याद करो। ड्रामा के चक्र को याद करो। जो ज्ञान बाबा के पास है वह ज्ञान हमारी आत्मा में भी है। वह भी ज्ञान सागर, हम आत्मा भी मास्टर ज्ञान सागर बनते हैं। नशा चढ़ना चाहिए ना। वह हम भाइयों (आत्माओं) को सुनाते हैं। सुनायेंगे तो शरीर द्वारा ही। इसमें संशय नहीं लाना चाहिए। बाप को याद करते-करते सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे, ममत्व मिटता जायेगा। कोई का नाम-मात्र प्यार होता है। हमारा भी ऐसा है। अभी तो हम जाते हैं सुखधाम। यह तो जैसे सब मरे पड़े हैं, इनसे दिल क्या लगानी है।

Points: **ज्ञान**

आंखें जो देखती है वह सब है मिटने वाले चलना है निज वतन जहाँ के प्रभु है रहने वाले अपनी नजर टिकाइए उस परमधाम पर पल भर निकालिए प्रभु के भी नाम पर

M.imp.

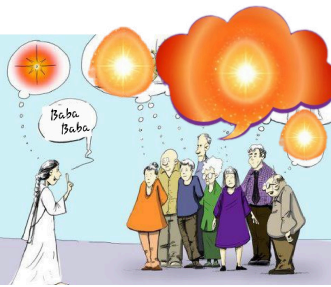


19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

शान्तिधाम में जाकर फिर सुखधाम में आकर राज्य करेंगे। इसको कहा जाता है पुरानी दुनिया से वैराग्य।

Point to ponder deeply...

बाप कहते हैं इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह सब खत्म हो जाने का है। विनाश के बाद स्वर्ग को देखेंगे। अब तुम बच्चों को बहुत मीठा बनना चाहिए। योग में रह कोई बात करेंगे तो उनको बड़ी कशिश होगी। यह ज्ञान ऐसा है जो बाकी सब भूल जाता है। अच्छा!



मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



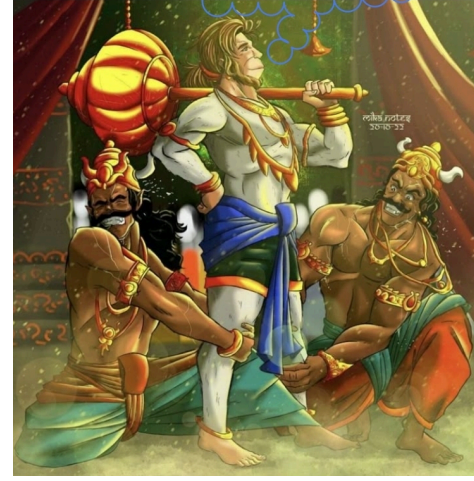
आंखें जो देखती है वह सब है मिटने वाले
चलना है निज वतन जहां के प्रभु है रहने वाले
अपनी नजर टिकाइए उस परमधाम पर
पल भर निकालिए प्रभु के भी नाम पर

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.



19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति
धारणा के लिए मुख्य सार:-

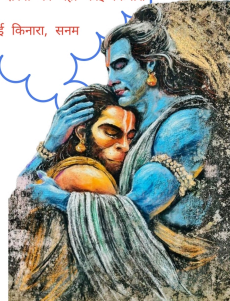
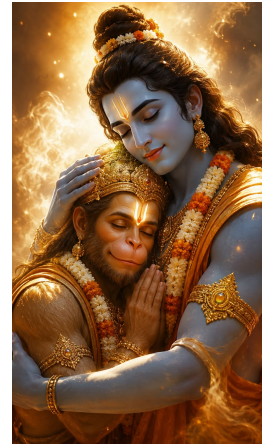
Come on...
Shake me,
If you Can...



1) ज्ञान मार्ग में अपनी अवस्था बहुत मजबूत बनानी है। विदेही बनना है। एक बाप से ही सच्ची-सच्ची प्रीत रखनी है।



मरके भी ना वादा अपना लोडगे
एक दुजे का साथ कभी ना छोडगे
अपना तो सदियों जन्मों का नाता है
जान से जान को कौन जुदा कर पाता है
तेरे सिवा, तेरे सिवा...
तेरे सिवा इस दरिया का नहीं कोई किनारा
सनम,
हो... नहीं कोई किनारा, सनम



2) ड्रामा की भावी पर अडोल रहना है। ड्रामा में जो हुआ सो राइट। कभी ^{never} डगमग नहीं होना है, किसी भी बात में संशय नहीं लाना है।



तो एक निमित्त भाव, हर बात में निमित्त हैं। चाहे सेवा में, चाहे स्थिति में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में, चेहरा और चलन निमित्त भाव का हो। और उसकी दूसरी विशेषता होगी - निर्मान भावना। निमित्त और निर्मान भाव से निर्माण करना। तो तीन बातें सुनी - निमित्त, निर्मान और निर्माण और चौथी बात है - निर्वाण जब चाहे निर्वाणधाम में पहुँच जायें। निर्वाण स्थिति में स्थित हो जायें क्योंकि स्वयं निर्वाण स्थिति में होंगे तब दूसरों को निर्वाणधाम में पहुँचा सकेंगे।

Call of time/समय की पुकार

अभी सभी मुक्ति चाहते हैं छुड़ाओ, छुड़ाओ चिल्ला रहे हैं। तो यह चार बातें अच्छी परसेन्ट में प्रैक्टिकल जीवन में होना अर्थात् तीव्र पुरुषार्थी। तब बापदादा कहेंगे वाह! वाह! बच्चे वाह! आप भी कहो वाह! बाबा वाह! वाह! ड्रामा वाह! वाह! पुरुषार्थ वाह! लेकिन पता है अभी क्या करते हो? पता है? कभी वाह! कहते हो कभी व्हाई कहते हो। वाह! के बजाए व्हाई, और व्हाई हो जाता है हाय। तो व्हाई नहीं, वाह! आपको भी क्या अच्छा लगता है, वाह। अच्छा लगता है या व्हाई? क्या अच्छा लगता है वाह। कभी व्हाई नहीं करते हो? गलती से भी आ जाता है। डबल फारेनर्स व्हाई-व्हाई कहते हैं? कभी-कभी कह देते हो?

जो डबल फारेनर्स कभी भी व्हाई नहीं कहते वह हाथ उठाओ। बहुत थोड़े हैं। अच्छा - भारतवासी जो वाह! वाह! के बजाए क्यो-क्या कहते है वह हाथ उठाओ। क्यो-क्या कहते हो? किसने छुट्टी दी है आपको? सस्कारो ने? पुराने सस्कारो ने आपको व्हाई की छुट्टी दे दी है और बाप कहते है वाह! वाह! कहो। व्हाई-व्हाई नहीं। तो अभी नये वर्ष में क्या करेंगे? वाह। वाह! करेंगे? या कभी-कभी व्हाई कहने की छुट्टी दे दे? व्हाई अच्छा नहीं है। जैसे वाई हो जाती है ना, तो खराब हो जाता है ना। तो व्हाई वाई है, यह नहीं करो। वाह! वाह! कितना अच्छा लगता है। हाँ बोलो, वाह। वाह! वाह!

अच्छा - तो दूरदेश में सुन रहे हैं, देख रहे हैं - भारत में भी विदेश में भी, उन बच्चों से भी पूछते हैं वाह! वाह! करते हो या व्हाई, व्हाई करते हो? अभी विदाई का दिन है ना! आज वर्ष के विदाई का लारस्ट डे है। तो सभी संकल्प करो - व्हाई नहीं कहेंगे। सोचेंगे भी नहीं। क्वेशचन मार्क नहीं, आश्चर्य की मात्रा नहीं, बिन्दी। क्वेशचन मार्क लिखो, कितना टेढा है और बिन्दी कितनी सहज है। बस नयनों में बाप बिन्दू को समा दो। जैसे नयनों में देखने की बिन्दी समाई हुई है ना! ऐसे ही सदा नयनों में बिन्दू बाप को समा लो। समाने आता है? आता है या फिट नहीं होती है? नीचे ऊपर हो जाती है ' तो क्या करेंगे? विदाई किसको देंगे? व्हाई को? कभी भी आश्चर्य की निशानी भी नहीं आवे, यह कैसे! यह भी होता है क्या! होना तो नहीं चाहिए, क्यो होता है! क्वेशचन मार्क नहीं, आश्चर्य की मात्रा भी नहीं। बस बाप और मैं।

AV:31/12/2004

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- कमजोरियों को फुलस्टाप देकर अपने सम्पन्न स्वरूप को प्रख्यात करने वाले साक्षात्कारमूर्त भव

Outcome/Output/Result

Finale Achievement



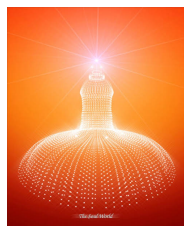
विश्व आपके कल्प पहले वाले सम्पन्न स्वरूप, पूज्य स्वरूप का सिमरण कर रही है इसलिए अब अपने सम्पन्न स्वरूप को प्रैक्टिकल में प्रख्यात करो।

Call of time/समय की पुकार

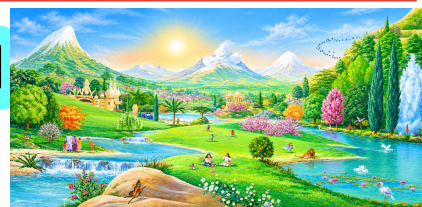


बीती हुई कमजोरियों को फुलस्टाप लगाओ, दृढ़ संकल्प द्वारा पुराने संस्कार-स्वभाव को समाप्त करो, दूसरों की कमजोरी की नकल मत करो, अवगुण धारण करने वाली बुद्धि का नाश करो,

दिव्य गुण धारण करने वाली सतोप्रधान बुद्धि धारण करो तब साक्षात्कार मूर्त बनेंगे।



स्लोगन:- अपने अनादि और आदि गुणों को स्मृति में रख उन्हें स्वरूप में लाओ।



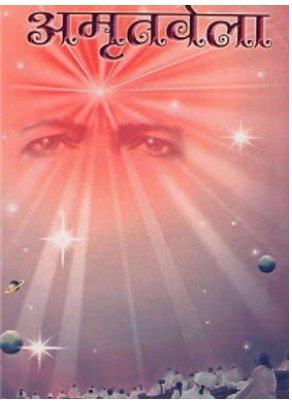
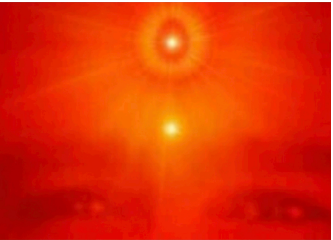
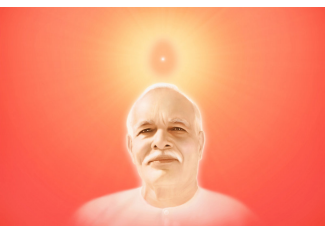
Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य

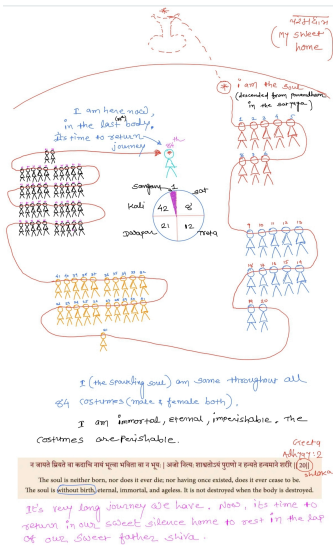
निराकार परमात्मा का रिजर्व तन ब्रह्मा तन है



यह तो अपने को पूरा निश्चय है कि परमात्मा अपने साकार ब्रह्मा तन द्वारा आकर पढ़ा रहे हैं, इस प्वाइन्ट पर बहुत जिज्ञासू प्रश्न पूछते हैं कि अमृतवेले समय निराकार परमात्मा जब अपने साकार तन में प्रवेश होते हैं तो उसी समय शरीर में क्या चेंज होती है? वो पूछते हैं क्या तुम उस समय बैठ उनको देखते हो कि कैसे परमात्मा आता है? अब इस पर समझाया जाता है परमात्मा की प्रवेशता होने समय ऐसे नहीं कि उस शरीर के कोई नयन, चयन बदली हो जाते हैं, नहीं। परन्तु हम जब ध्यान में जाते हैं तब नयन, चयन बदली हो जाता है परन्तु इस साकार ब्रह्मा का पार्ट ही गुप्त है। जब परमात्मा इसके तन में आता है तो कोई को भी पता नहीं चलता, उसका यह तन रिजर्व किया हुआ है इसलिए सेकेण्ड में आता है, सेकेण्ड में जाता है, अब इस राज को समझना। बाकी ऐसे नहीं कोई प्वाइन्ट समझ में न



Indian Education System



मैं सुप्रीम हूँ,
जन्म-मरण के चक्र में
नहीं आता

मैं सुप्रीम आत्मा
(शिव बाबा)

जन्म-मरण
का चक्र



12

19-10-2026 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



Mind very well...

यस्पतिरेक एव नमस्यो विक्ष्वीड्यः
अथर्ववेद ३/३/३

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का एक ही स्वामी है। वही सबके द्वारा नमस्कार करने के योग्य है, वही प्रशंसा करने के योग्य है।



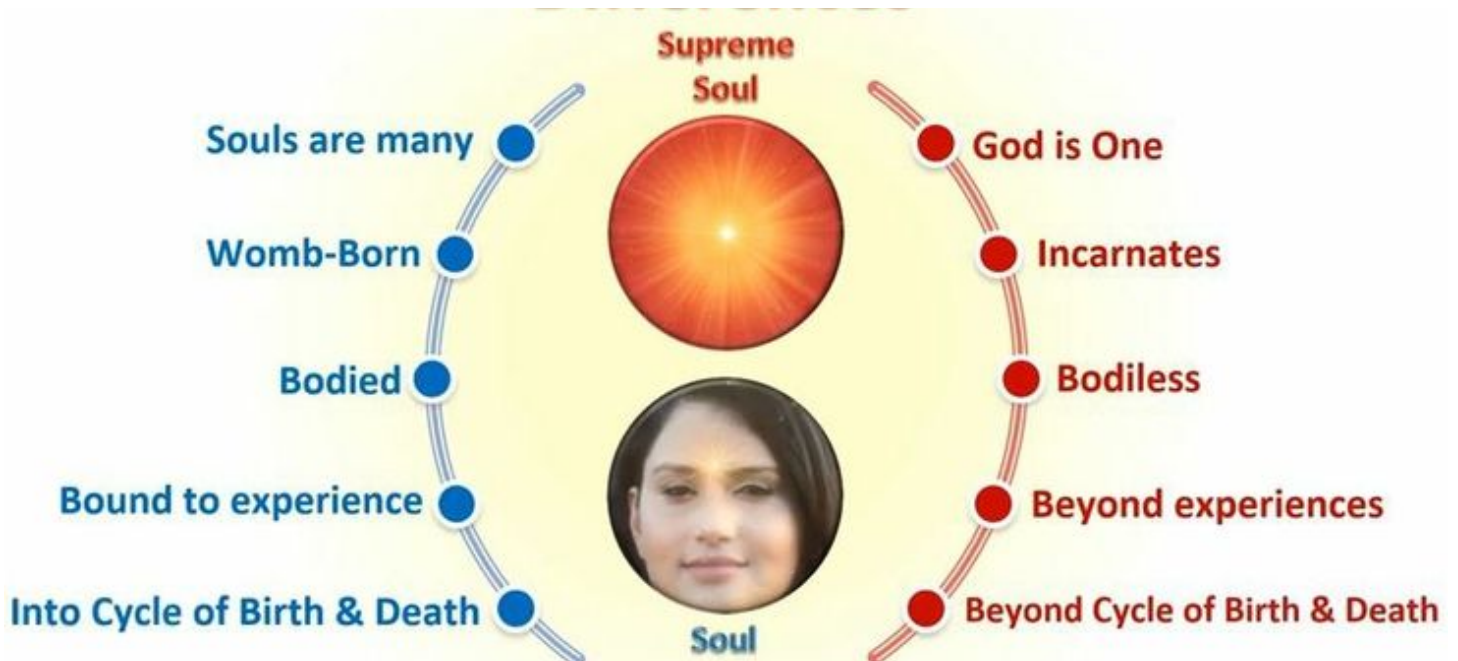
आत्मा का साइज एक ही रीति में है, बाकी आत्मा और परमात्मा में सिर्फ गुणों की ताकत का फर्क अवश्य है। अब यह जो इतने गुण हैं वो सारी महिमा परमात्मा की है। परमात्मा दुःख सुख से न्यारा है, सर्वशक्तिवान है, उनकी ही सारी शक्ति काम कर रही

है। बाकी मनुष्य आत्मा की कोई शक्ति नहीं चल सकती है। परमात्मा का ही सारा पार्ट चलता है, भल

परमात्मा पार्ट में भी आता है, तो भी खुद न्यारा रहता है। लेकिन आत्मा पार्ट में आते भी पार्टधारी के

रूप में आ जाती है, परमात्मा पार्ट में आते भी
कर्मबन्धन से न्यारा है। आत्मा पार्ट में आते भी

कर्मबन्धन के वश हो जाती है, यह है आत्मा और परमात्मा में अन्तर, भेद। अच्छा। ओम् शान्ति।



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये अव्यक्त इशारे -

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो



कोई गाली भी दे, झूठा इल्जाम भी लगाये, लेकिन आपको क्रोध न आये।



अपकारी के ऊपर उपकार करना, यही आप ब्राह्मणों का कर्म है।

वह गाली दे आप गले लगाओ, यही है कमाल।

इसको कहा जाता है परिवर्तन।

गले लगाने वाले को गले लगाना, यह कोई बड़ी बात नहीं लेकिन

निन्दा करने वाले को सच्चा मित्र मन से मानो, तब कहेंगे उपकार करने वाले।

If you wish to stay connected, Here is the link



BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009

Revise: 12/4/26

All वरदान slogans July 26

Click

All अव्यक्त इशारे July 26

Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place

Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

AV: 15/03/2010

Revise: 31/05/2026

Subtle Psychology

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।

और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वतः ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है बाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.3.1 सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो:

(अ) मीठे बच्चे, सुबह का समय बहुत अच्छा है। सवेरे-सवेरे उठ यहाँ आकर बैठो तो याद ठहरेगी, फिर धीरे-धीरे आदत पड़ने से याद पक्की हो जायेगी। तुम देखते हो कई बच्चे सवेरे उठ नहीं सकते। 10-15 वर्ष मेहनत करते आये हैं, तो भी समय पर उठ नहीं सकते। कम से कम 3-4 बजे तो उठो। भक्त लोग भी सवेरे उठ कर ध्यान करते हैं, जाप करते हैं हनुमान का, शिव का। तो सवेरे-सवेरे उठ कर बाप को प्यार से याद करने की आदत पक्की डालनी है। रात को जल्दी सो जाओ। कोशिश करो रात को एक-दो बजे जागने की। बहुत जमा करना है ना! तुम नींद को जीतने वाले मशहूर हो।

हैं जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

(आ) कॉलेज के बच्चे भी सवेरे उठ कर अध्ययन करते हैं। सवेरे क्यों बैठते हैं? क्योंकि आत्मा विश्राम कर रिफ्रेश हो जाती है। सवेरे उठने का शौक होना चाहिए। क्वीन विक्टोरिया का वज़ीर भी रात को बाहर बत्ती के नीचे जा कर पढ़ता था। भक्तिमार्ग में भी सवेरे उठते हैं। ज्ञानमार्ग में सवेरे उठ कर बाप को याद करना चाहिए। बाप कहते हैं तुम्हारा यह रूहानी धन्य बहुत अच्छा है। सवेरे और शाम को इस सर्विस में लग जाओ। शाम का समय 6 से 7 बजे का अच्छा होता है। सत्संग आदि भी सवेरे और शाम को करते हैं।

100

AmritVela.p65



2/18/2010, 11:58 AM

Early to bed and early to rise makes a man healthy, wealthy and wise.
Benjamin Franklin



अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

(इ) मीठे बच्चे, याद के लिए अमृतवेले का समय बहुत अच्छा है। उस समय अन्तर्मुखी बन आत्म-स्वरूप में स्थित होकर बैठ जाओ।

Attention...!

(ई) सवेरे-सवेरे उठ याद में ज़रूर बैठना चाहिए। इसमें गफलत नहीं करनी है। पुण्य का खाता जमा करना है। बच्चे, माया से भी डरो मत। भल कितना भी भुलाने की कोशिश करे, लेकिन थको नहीं। अमृतवेले उठ याद में रहने का पूरा-पूरा पुरुषार्थ करो। परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो फिर बहाने बहुत बनाते हैं। अगर सवेरे-सवेरे उठते नहीं हैं, तो जिन सोया तिन खोया। सिर्फ सोना और खाना — यह तो गँवाना है। इसलिए सवेरे-सवेरे उठने की आदत डालो।

